No of Questions : 30

No of Pages : 5

नामांक

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | |

# माध्यमिक परीक्षा, 2019

# हिन्दी

# मॉडल पेपर 4

**समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे** **पूर्णांक : 80**

**परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :-**

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

## खण्ड-अ

**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

वल्लभभाई की विलायत जाकर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने की इच्छा आरंभ से ही थी। वे अपनी प्रैक्टिस में से कुछ रुपया भी इसके निमित्त बचाकर रखने लगे और इस संबंध में उन्होंने एक विदेशी कंपनी से पत्र-व्यवहार भी जारी रखा। जब विदेशी कंपनी ने उनकी विदेश-यात्रा की स्वीकृति का पत्र उन्हें भेजा तो वह पत्र उनके बड़े भाई के हाथ पड़ गया। अंग्रेजी में दोनों का नाम वी. जे. पटेल होने के कारण यह गड़बड़ी हो गई। विट्ठलभाई ने जब वल्लभभाई से कहा कि मैं तुमसे बड़ा हूँ, मुझे पहले विदेश जाने दो, तो वल्लभभाई ने न केवल उन्हें जाने की अनुमति दी, बल्कि उनके खर्च का उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर ले लिया। इस घटना के तीन वर्ष बाद जब सन् 1908 में बड़े भाई विलायत से वापस लौट आए, तभी वल्लभभाई सन् 1910 में विलायत जा सके। बड़े भाई के लिए इतना त्याग करना उनके व्यक्तित्व की विशालता का परिचायक है।

**1.** उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

**2.** वल्लभभाई विदेश कब गए? 1

**3.** वल्लभभाई की विलायत जाकर कौन-सी परीक्षा पास करने की इच्छा थी? 2

**निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

जन्म जन्मांतरों के पुण्य का परिणाम है जिंदगी,<br>
तर्पण व समर्पण का परिणाम है जिंदगी।



www.rbse.online

www.rajteachers.com

स्वर्ग के देवों का पैगाम है जिंदगी,
सेवा और बलिदान का अंजाम है जिंदगी।
जिंदगी एक विलक्षण अभियान है,
जिंदगी तपोनिष्ठ मनीषियों का तत्व ज्ञान है।
जिंदगी अनायास लब्ध चंदन का उद्यान है,
ऐसे जियो कि मरकर भी मुस्कराए जिंदगी,
मौत को भी हँसकर गले लगाए जिंदगी।

**4.** जिंदगी किसका परिणाम है? 1

**5.** जिंदगी कैसे जीनी चाहिए? 1

**6.** जिंदगी का उद्देश्य क्या होना चाहिए? 2

## खण्ड–ब

**7.** दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. विज्ञान के लाभ तथा हानियाँ
   (क) प्रस्तावना
   (ख) आधुनिक आविष्कार
   (ग) समय व दूरी पर नियंत्रण
   (घ) विद्युत एवं पानी
   (ड़) स्वास्थ्य एवं कृषि के क्षेत्र में उन्नति
   (च) परमाणु शक्ति
   (छ) विज्ञान की हानियाँ
   (ज) उपसंहार
2. मेरे सपनों का भारत
   (क) प्रस्तावना
   (ख) भौगोलिक स्थिति व जनसंख्या
   (ग) सांस्कृतिक एकता
   (घ) कृषि–प्रधान
   (ङ) उन्नतिशील
   (च) भारत के महापुरुष
   (छ) महान–प्रजातंत्र
   (ज) निष्कर्ष
3. राष्ट्र की समृद्धि में गाय का योगदान
   (क) प्रस्तावना
   (ख) गो–रक्षण के उपाय
   (ग) कृषि–कार्य में गोवंश की उपादेयता
   (घ) उपसंहार
4. इण्टरनेट–वरदान या अभिशाप


www.rajteachers.com

(क) प्रस्तावना
(ख) इण्टरनेट से आशय
(ग) इण्टरनेट से लाभ
(घ) सदुपयोग की समझ
(ङ) उपसंहार

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर का छात्र मानकर प्रधानाचार्य जी को विद्यालय में खेल सुविधाएँ बढ़ाने का निवेदन किया गया हो, ऐसा पत्र लिखिए। 4

**अथवा**

8. आपका नाम ईशांत है। आप लक्ष्मीनगर, जयपुर के हैं। आपके क्षेत्र में अकसर अनियमित बिजली कटौती की समस्या रहती है। नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने हेतु मुख्य अभियंता विद्युत जयपुर को एक शिकायती पत्र लिखिए।

## खण्ड–स

9. **मेहताब खेत जोतता है।** वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

10. निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं को रेखांकित कीजिए और उनके भेद व काल बताइए– 3

| वाक्य | भेद | काल |
|---|---|---|
| बच्चा रोता होगा। | .......... | .......... |
| श्याम आता है। | .......... | .......... |
| अशोक आया। | .......... | .......... |

11. बहुब्रीहि समास की सोदाहरण परिभाषा लिखिए? 2

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$
1. उन्हों को खाना खिला दो।
2. वह बहुत जल्दी चले गए।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$
1. शंका भाँपना
2. हाथ कटना

14. **चाम का दाम चलाना** लोकोक्ति का आशय लिखिए। 1

## खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

दामिनी दमक, सुरचाप की चमक, स्याम
घटा की झमक अति घोर घनघोर तैं।
कोकिला, कलापी कल कूजत हैं जित–तित,
सीकर ते सीतल समीर की झकोर तैं।
सेनापति आवन कह्यो है मनभावन सु


www.rbse.online
www.rajteachers.com

लाग्यौ तरसावन विरह–जुर जोर तैं।
आयौ सखी सावन, मदन सरसावन,
लगयौ है बरसावन सलिल चहुँ ओर तैं।।

**अथवा**

**15.** निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ़यौ दल,
निबल अनल, गयौ सूरि सियराइ कै।
हिम के समीर, तेई बरसैं विषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन मैं जाइ के।
धूम नैन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिए सौं लगाई रहैं नैंक सुलगाई कै।
मानो भीत जानि महा सीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।।

**16.** निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6
उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्‌टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए, तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्‌टी की बंदूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जाएँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमे–हिंद लपककर शेर की गर्दन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा।

**अथवा**

**16.** निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–
बात कुछ बनी नहीं। खासी गाली–गलौज थी; कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए, मानो कोई धेलचा कनकौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकालने वाली चीज है। उसको पेट के अंदर डाल दिया जाना, बेतुकी–सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे–हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

**17.** पठितांश के आधार पर देव की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 6

**अथवा**

**17.** "देव ने दूसरे पद्य में मौलिकतापूर्वक कृष्ण की जादुई सूरत में गोपिकाओं के विवश समर्पण का वर्णन किया है।" इस कथन की सत्यता पर प्रकाश डालिए।

**18.** अमर शहीद एकांकी के आधार पर सागरमल गोपा का चरित्र–चित्रण कीजिए। 6

**अथवा**

**18.** 'वह तो बस आहुति देना ही अपना धर्म समझता है।'
सागर के इस कथन का क्या अभिप्राय है?



www.rajteachers.com

**19.** शिव का धनुष कैसे टूट गया था? 2

**20.** 'अस्वाभाविक मित्रता के घातक परिणाम होते हैं।' संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

**21.** वर्षा ऋतु के आगमन से प्रकृति में कौन-कौन से बदलाव आए हैं? 2

**22.** हामिद के चरित्र की कोई तीन विशेषताएँ बताइए। 2

**23.** सूर्यास्त के समय समुद्र के पानी का किन विविध रंगों में परिवर्तन हुआ? 2

**24.** आत्मा और परमात्मा की एकता को लेकर सन्त पीपा ने क्या विचार व्यक्त किये? 2

**25.** रस की लालची और दासी कौन हो गई है? 1

**26.** 'जै जग मंदिर दीपक सुंदर' से कवि का क्या तात्पर्य है? 1

**27.** **अमर शहीद** एकांकी का मुख्य पात्र कौन है? 1

**28.** दादूदयाल के तीन प्रमुख शिष्यों के नाम लिखिए। 1

**29.** महाकवि देव का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

**30.** लक्ष्मीनारायण रंगा के व्यक्तित्व-कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

□□□□□□□


www.rbse.online

www.rajteachers.com

# राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019
# 10वीं कक्षा
# हिंदी
# मॉड्ल पेपर 4

**समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे** **(पूर्णांक : 80)**

**परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :–**

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

## खण्ड–अ

**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

वल्लभभाई की विलायत जाकर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने की इच्छा आरंभ से ही थी। वे अपनी प्रैक्टिस में से कुछ रुपया भी इसके निमित्त बचाकर रखने लगे और इस संबंध में उन्होंने एक विदेशी कंपनी से पत्र–व्यवहार भी जारी रखा। जब विदेशी कंपनी ने उनकी विदेश–यात्रा की स्वीकृति का पत्र उन्हें भेजा तो वह पत्र उनके बड़े भाई के हाथ पड़ गया। अंग्रेजी में दोनों का नाम वी. जे. पटेल होने के कारण यह गड़बड़ी हो गई। विट्ठलभाई ने जब वल्लभभाई से कहा कि मैं तुमसे बड़ा हूँ, मुझे पहले विदेश जाने दो, तो वल्लभभाई ने न केवल उन्हें जाने की अनुमति दी, बल्कि उनके खर्च का उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर ले लिया। इस घटना के तीन वर्ष बाद जब सन् 1908 में बड़े भाई विलायत से वापस लौट आए, तभी वल्लभभाई सन् 1910 में विलायत जा सके। बड़े भाई के लिए इतना त्याग करना उनके व्यक्तित्व की विशालता का परिचायक है।

**1.** उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

**उत्तर :**
वल्लभभाई के व्यक्तित्व की विशालता।

**2.** वल्लभभाई विदेश कब गए? 1

**उत्तर :**
वल्लभभाई सन् 1910 ई. में विदेश गए थे।

**3.** वल्लभभाई की विलायत जाकर कौन–सी परीक्षा पास करने की इच्छा थी? 2

**उत्तर :**
वल्लभभाई की विलायत जाकर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने की इच्छा थी।

**निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

जन्म जन्मांतरों के पुण्य का परिणाम है जिंदगी,
तर्पण व समर्पण का परिणाम है जिंदगी।
स्वर्ग के देवों का पैगाम है जिंदगी,
सेवा और बलिदान का अंजाम है जिंदगी।
जिंदगी एक विलक्षण अभियान है,
जिंदगी तपोनिष्ठ मनीषियों का तत्व ज्ञान है।
जिंदगी अनायास लब्ध चंदन का उद्यान है,
ऐसे जियो कि मरकर भी मुस्कराए जिंदगी,
मौत को भी हँसकर गले लगाए जिंदगी।

**4.** जिंदगी किसका परिणाम है? 1

**उत्तर :**
जिंदगी कई जन्मों के पुण्य कर्मों का परिणाम है।

**5.** जिंदगी कैसे जीनी चाहिए? 1

**उत्तर :**
अपने जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिए कि मरने के बाद भी सब याद करें।

**6.** जिंदगी का उद्देश्य क्या होना चाहिए? 2

**उत्तर :**
अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सर्व कल्याण हेतु जीना।

## खण्ड–ब

**7.** दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. विज्ञान के लाभ तथा हानियाँ

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

(क) प्रस्तावना
(ख) आधुनिक आविष्कार
(ग) समय व दूरी पर नियंत्रण
(घ) विद्युत एवं पानी
(ङ) स्वास्थ्य एवं कृषि के क्षेत्र में उन्नति
(च) परमाणु शक्ति
(छ) विज्ञान की हानियाँ
(ज) उपसंहार

2. मेरे सपनों का भारत
(क) प्रस्तावना
(ख) भौगोलिक स्थिति व जनसंख्या
(ग) सांस्कृतिक एकता
(घ) कृषि–प्रधान
(ङ) उन्नतिशील
(च) भारत के महापुरुष
(छ) महान–प्रजातंत्र
(ज) निष्कर्ष

3. राष्ट्र की समृद्धि में गाय का योगदान
(क) प्रस्तावना
(ख) गो–रक्षण के उपाय
(ग) कृषि–कार्य में गोवंश की उपादेयता
(घ) उपसंहार

4. इण्टरनेट–वरदान या अभिशाप
(क) प्रस्तावना
(ख) इण्टरनेट से आशय
(ग) इण्टरनेट से लाभ
(घ) सदुपयोग की समझ
(ङ) उपसंहार

**उत्तर :**

### 1. विज्ञान के लाभ तथा हानियाँ

(क) **प्रस्तावना –** वर्तमान युग विज्ञान का युग है। गत एक शताब्दी से विज्ञान एक से बढ़कर एक खोजें करता रहा है। जो बातें कभी कल्पना में सोची जाती थीं, विज्ञान ने उन्हें साक्षात् सिद्ध कर दिखाया है। मानव चाँद पर पहुँच गया और इससे भी दूर के ग्रहों पर पहुँचने की तैयारी कर रहा है। विज्ञान के सहयोग से मानव–हृदय तक परिवर्तित होने लगा है।

(ख) **आधुनिक आविष्कार –** परमाणु शक्ति एवं विद्युत के अनुसंधान ने मानव को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया है। तेज चलने वाले वाहन, समुद्र के वक्षस्थल को रौंदने वाले जहाज और असीम आसमान में वायु की गति से भी तेज चलने वाले विमान, नक्षत्र लोक तक पहुँचाने वाले रॉकेट प्रकृति पर मानव की विजय के उदाहरण हैं। आज तार, टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, ग्रामोफोन आदि ने मानव जीवन में अनेक सुख–सुविधाएँ प्रदान की हैं।

(ग) **समय व दूरी पर नियंत्रण –** विज्ञान ने मानव को अनेक सुख–सुविधाएँ प्रदान की हैं, जिनको देखकर कहा जा सकता है कि विज्ञान मनुष्य के लिए एक वरदान साबित हुआ है। विज्ञान के कारण मनुष्य ने समय और दूरी पर नियंत्रण कर लिया है। लम्बी यात्रा बस, रेलगाड़ी, हवाई जहाज आदि द्वारा कुछ घण्टों में पूरी की जा सकती है। मित्रों व सम्बन्धियों तक तार व टेलीफोन द्वारा कुछ ही क्षणों में अपना संदेश भेज सकते हैं।

(घ) **विद्युत एवं पानी –** विद्युत के आविष्कार से हमारी महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ पूरी हो गई हैं। देश में विभिन्न कारखाने चलाए जाते हैं। विद्युत का उपयोग हम घरेलू जीवन में भी करते हैं। बटन दबाते ही पंखा चलने लगता है और बल्ब जगमगा उठते हैं। इसी प्रकार से वैज्ञानिक यंत्रों (बिजली) द्वारा हमें पीने के लिए स्वच्छ पानी मिलता है।

(ङ) **स्वास्थ्य एवं कृषि के क्षेत्र में उन्नति –** एक्सरे यंत्र के द्वारा शरीर के भीतरी भाग का चित्र लिया जा सकता है। इसके माध्यम से सैकड़ों रोगों की चिकित्सा की जाती है। प्लेग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों का उपचार विज्ञान की खोजों से ही सम्भव हुआ है। कृषि के क्षेत्र में विज्ञान ने बहुत उन्नति की है। पुराने हल तथा बैल के स्थान पर आज का किसान ट्रैक्टर से खेती करता है। वह नलकूप, पम्प आदि से खेती की सिंचाई करता है।

(च) **परमाणु शक्ति –** परमाणु शक्ति के आविष्कार ने मानव–जाति को आश्चर्यचकित कर दिया है। परमाणु शक्ति से विभिन्न बड़े–बड़े उद्योग चलाए जाते हैं। परमाणु विस्फोट से पर्वतों को तोड़कर सड़कें बनाई जा सकती हैं तथा नहरें खोदी जा सकती हैं। इस प्रकार विज्ञान के अनेक लाभों को देखते हुए कहा जा सकता है कि विज्ञान मानव जीवन के लिए वरदान है।

(छ) **विज्ञान की हानियाँ –** विज्ञान से जहाँ मानव को इतने लाभ हुए हैं, वहाँ अत्यधिक हानियाँ भी हुई हैं। विज्ञान के विनाशक यंत्रों ने मानव की नींद छीन ली है, उसका सुख–चैन समाप्त कर दिया है। विज्ञान ने मानव को अपने यंत्रों का आदि बना दिया है। उसके में बेकारी लिख दी है। आज का मानव बाह्य रूप या भौतिक रूप से सम्पन्न एवं समृद्ध होने पर भी हृदय में अशान्ति लिए हुए भटक रहा है। उसके पास आध्यात्मिक ज्ञान नहीं रहा। वह आज श्रद्धा व सहानुभूति को भूलकर तर्क–वितर्क की छाया में जीवन व्यतीत कर रहा है। वह ईश्वर से विमुख होकर विज्ञान के सहारे जीवित है। अतः आज मानव के जीवन में अशान्ति होती जा रही है।

(ज) **उपसंहार –** निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विज्ञान अपने आप में न अच्छा है, न बुरा है। वह तो मानव के हाथ में एक शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग हम अच्छे या बुरे दोनों रूप में कर सकते हैं। विज्ञान के सदुपयोग से इस संसार को उपवन तथा दुरुपयोग से उजाड़ बनाया जा सकता है।

### 2. मेरे सपनों का भारत

(क) **प्रस्तावना –** भारत एक महान देश है। इसकी संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। राजा दुष्यंत और शकुन्तला के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। संसार में भारत देश का बड़ा गौरव है।

(ख) **भौगोलिक स्थिति व जनसंख्या –** भारत एक विशाल देश है। जनसंख्या की दृष्टि से यह विश्व में दूसरे स्थान पर है। इसकी वर्तमान जनसंख्या सवा सौ करोड़ से भी अधिक है। भारत के उत्तर में हिमालय, दक्षिण में लंका और हिन्द महासागर है। यहाँ विभिन्न प्रकार के पर्वत, नदियाँ और मरुस्थल हैं। भौगोलिक दृष्टि से यहाँ अनेक विविधताएँ हैं।

(ग) **सांस्कृतिक एकता –** भारत में विभिन्न धर्मों, जातियों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं, किंतु फिर भी यहाँ सांस्कृतिक एकता

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएेंगे।
www.rajteachers.com

विद्यमान है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारा देश एक है। यहाँ विभिन्न महत्वपूर्ण स्थान हैं। हरिद्वार, काशी, कुरुक्षेत्र, मथुरा, गया, जगन्नाथपुरी, द्वारिका आदि यहाँ के प्रसिद्ध तीर्थ–स्थल हैं। शिमला, मसूरी, नैनीताल, मनाली, दार्जिलिंग आदि सुन्दर पर्वतीय स्थान हैं।

(घ) **कृषि–प्रधान –** भारत एक कृषि–प्रधान देश है। भारत में लगभग छह लाख गाँव बसते हैं। इसकी लगभग अस्सी प्रतिशत जनता गाँवों में रहती है। यहाँ गेहूँ, मक्का, बाजरा, ज्वार, चना, धान, गन्ना आदि की फसलें होती हैं। अन्न की दृष्टि से अब हम आत्मनिर्भर हैं।

(ङ) **उन्नतिशील –** भारतवर्ष कई सदियों की गुलामी झेलने के बाद सन् 1947 में स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता मिलने के तुरन्त पश्चात् ही यहाँ उन्नति के लिए प्रयत्न प्रारम्भ हो गए थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यहाँ अनेक प्रकार के कारखाने लगाए, जिनमें आशातीत उन्नति हुई है। यहाँ अनेक प्रकार की योजनाएँ आरम्भ हुईं। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत हर क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई। जिन वस्तुओं को हम विदेशों से मँगवाते थे, आज उन्हीं देशों को अनेक वस्तुएँ बनाकर भेजी जा रही हैं। विज्ञान के क्षेत्र में यहाँ बहुत उन्नति हुई है। परमाणु और उपग्रह के क्षेत्र में भी अब हमारा देश किसी से पीछे नहीं हैं।

(च) **भारत के महापुरुष –** भारत महापुरुषों की जन्म–स्थली है। राम, कृष्ण, बृद्ध, महावीर, नानक आदि महापुरुष इसी देश में हुए हैं। महाराणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह जी इसी देश की शोभा थे। दयानन्द, विवेकानन्द, रामतीर्थ, तिलक, गांधी, सुभाष, चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि इसी धरती का शृंगार थे। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास, सूरदास, कबीर आदि की वाणी यहीं गूँजती रही। भारत ने ही वेदों के ज्ञान से संसार को मानवता का मार्ग दिखाया।

(छ) **महान–प्रजातंत्र –** वर्तमान में भारत में प्रजातंत्र है। यह एक धर्म–निरपेक्ष देश है। भारत संसार का सबसे बड़ा प्रजातंत्र गणराज्य है। हमारा अपना संविधान है। संविधान में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार दिए गए हैं। भारतवासी सदा से शान्तिप्रिय रहे हैं, किंतु यदि कोई हमें डराने या धमकाने का प्रयत्न करे तो यहाँ के रणबाँकुरे उसके दाँत खट्टे कर डालते हैं।

(ज) **निष्कर्ष –** तिरंगा हमारे देश का राष्ट्रीय ध्वज है। यहाँ प्रकृति की विशेष छटा दर्शनीय है। यहाँ हर दो मास बाद ऋतु बदलती रहती है। कविवर जयशंकर प्रसाद ने ठीक ही लिखा है– **अरुण यह मधुमय देश हमारा।**

### 3. राष्ट्र की समृद्धि में गाय का योगदान

(क) **प्रस्तावना –** इस संसार में मनुष्य के साथ ही अनेक पशु–पक्षियों का विशेष महत्व माना जाता है। घरों में पालतू पशुओं में गाय का अग्रणी स्थान है। हिन्दू समाज में इसे माता के समान पूज्य मानकर गोमाता कहा जाता है तथा हमारे पुराणों में इसके शरीर में सभी देवताओं का आवास बताया गया है। इसी कारण हिन्दू घरों में गाय को कामधेनु की तरह सबसे पवित्र एवं पूज्य पशु माना जाता है। वैसे भी गाय का दूध माता के दूध के समान सुपाच्य और पौष्टिक होता है।

(ख) **गो–संरक्षण के उपाय–** हिन्दू धर्मशास्त्रों में गाय की रक्षा एवं पालन माता के समान करने का निर्देश है। प्राचीनकाल में गोशालाओं में इनका पालन होता था। वर्तमान में गोशालाओं की कमी है। कुछ धार्मिक लोग गोशालाओं को चारा–दाना उपलब्ध कराते हैं। कुछ लोग गायों को आवारा छोड़ देते हैं और घोर स्वार्थी बन जाते हैं। वस्तुतः गो–संरक्षण के लिए चारागाहों का विकास किया जावे, गोशालाओं का निर्माण होवे और दूध न देने वाली गायों को भी कृषि–पशुपालन की दृष्टि से देखभाल करनी चाहिए।

(ग) **कृषि–कार्य में गो–वंश की उपादेयता–** गाय अत्यन्त उपयोगी पशु है। इसका गोबर खाद की तरह खेतों को उपजाऊ बनाता है। इसके गोबर से धूप, अगरबत्ती आदि बनायी जाती है तथा गोमूत्र का प्रयोग औषधि निर्माण में होता है। हिन्दू समाज गो–मूत्र के अर्क को पूजा के काम में तथा फर्श की सफाई में काम लेते हैं। गाय के बछड़े बड़े होकर बैल बनते हैं जो हल चलाने और माल ढोने की गाड़ियों में काम आते हैं। इस तरह कृषि कार्य में गोवंश की अत्यधिक उपयोगिता है। दूध एवं खाद आदि के लिए ग्रामीण समाज में इसे अत्यधिक उपयोगी पशु मानकर पूरी देखभाल की जाती है।

(घ) **उपसंहार–** प्राचीन काल में गायों का दान श्रेष्ठ पुण्य कार्य माना जाता था। उस समय गोपालन को आर्थिक समृद्धि का प्रतीक समझा जाता था। वर्तमान में राष्ट्रीय समृद्धि की दृष्टि से गो–वंश का अत्यधिक योगदान है। इसी कारण इसके संरक्षण एवं पालन पर पूरा ध्यान दिया जाता है। इसी से हमारे देश को गोपालकों का देश कहा जाता है।

### 4. इण्टरनेट– वरदान या अभिशाप

(क) **प्रस्तावना –** आज के युग में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का असीमित विस्तार हो रहा है। अब ऐसे विभिन्न उपकरण आ गये हैं, जिनसे सम्पूर्ण विश्व से तत्काल सम्पर्क साधा जा सकता है। सूचना–संचार एवं मनोरंजन आदि के लिए अब कम्प्यूटर एवं सेलफोन का जो अन्तरजाल प्रयुक्त हो रहा है, उसे इण्टरनेट कहते हैं। परस्पर सूचना–सम्प्रेषण एवं मनोरंजन का सुलभ साधन होने से इण्टरनेट के प्रति युवाओं में विशेष आकर्षण बढ़ रहा है।

(ख) **इण्टरनेट से आशय–** इण्टरनेट का अर्थ विश्व के करोड़ों कम्प्यूटरों को परस्पर जोड़ने वाला ऐसा **अन्तर–जाल** है, जो क्षणभर में समस्त जानकारियाँ उपलब्ध करा देता है। यह कम्प्यूटरों एवं सेलफोनों द्वारा सूचना आदान–प्रदान की प्रणाली है। इसमें प्रत्येक इण्टरनेट कम्प्यूटर **होस्ट** कहलाता है और यह स्वतंत्र रूप से डाउनलोड किया जाता है। अब नवीनतम स्मार्टफोनों के सहारे इण्टरनेट और भी सुगम हो गया है।

इण्टरनेट के प्रचार–प्रसार हेतु वेबसाइटों की संरचना, उनका रजिस्ट्रेशन, संचालन एवं डाउनलोड करने से संबंधित विभिन्न सॉफ्टवेयरों का निर्माण किया गया है। वस्तुतः वेबसाइटों के माध्यम से ही इण्टरनेट का जाल फैलाया जाता है। अब तो वीडियो, ऑडियो, गेम्स, डेस्कटॉप, वॉलपेपर, फोटोग्राफ, ई–बुक्स, जी–मेल आदि अनेक बातों का परिचालन इण्टरनेट से हो रहा है। इण्टरनेट का ब्राउजर ओपन करते ही पंजीकृत वेब के द्वारा मनचाही जानकारी क्षणभर में घर–बैठे ही मिल जाती है। **इण्टरनेट** या **नेट** सूचना–संचार का तीव्र–प्रोसेसिंग माध्यम कहलाता है।

(ग) **इण्टरनेट से लाभ–** इण्टरनेट से अनेक लाभ हैं। परस्पर विचार–विनिमय, सूचनाओं का आदान–प्रदान, ज्ञान–प्रसार एवं विविध मनोरंजन के साधन इससे प्राप्त हो जाते हैं। विद्यार्थियों की ज्ञान–

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

बुद्धि में यह अत्यधिक उपयोगी है। इससे अखबारों या प्रिन्ट मीडिया के समाचार पढ़ने, दुनियाभर की परिचर्चाओं में भाग लेने, पुस्तकों एवं व्यक्ति विशेष की जानकारी हासिल करने में सुविधा रहती है। इससे कुछ हानियाँ भी हैं, परन्तु इससे असीमित लाभ होने से यह अत्यधिक लोकप्रिय माध्यम है।

(घ) **सदुपयोग की समझ–** इण्टरनेट द्वारा व्यापारिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं व्यक्तिगत सारे काम सिद्ध हो जाते हैं। परन्तु इससे वायरस, स्पाईवेयर तथा एडवेयर के कारण दुरुपयोग हो जाता है। अतः फ्री–डाउनलोड करने में सावधानी रखनी पड़ती है। विद्यार्थियों को इसका सदुपयोग ज्ञान–भण्डार की दृष्टि से करना चाहिए।

(ङ) **उपसंहार–** इण्टरनेट का वर्तमान में तेजी से विकास हो रहा है। इस पर कई तरह के सॉफ्टवेयर मुफ्त में डाउनलोड किये जा सकते हैं। यह सूचना–संचार का चमत्कारी साधन है तथा सामाजिक–आर्थिक प्रगति में इसकी उपयोगिता अपरिहार्य बन गई है।

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर का छात्र मानकर प्रधानाचार्य जी को विद्यालय में खेल सुविधाएँ बढ़ाने का निवेदन किया गया हो, ऐसा पत्र लिखिए। 4

**उत्तर :**

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जयपुर।

**विषय : विद्यालय में खेल सुविधाएँ बढ़ाने हेतु प्रार्थना–पत्र।**

महोदय,

निवेदन है कि हमारे विद्यालय में इस समय केवल बास्केट बॉल की सुविधा उपलब्ध है, जबकि हमारे विद्यालय ने पिछले वर्षों में बैडमिंटन और टेबिल–टेनिस के राज्य स्तरीय खिलाड़ी प्रदान किए हैं। वर्तमान में बैडमिंटन के अभ्यास के लिए न तो अच्छा नैट उपलब्ध है और न ही शटल कॉक। प्रायः खिलाड़ियों को शटल कॉक स्वयं बाजार से खरीदकर लानी पड़ती है, जो कि दो–तीन दिन के अभ्यास में टूट जाती है। प्रतिभावान निर्धन खिलाड़ी इस खर्च को वहन करने में समर्थ नहीं हैं, इस कारण उन्होंने विद्यालय में अभ्यास करना छोड़ दिया है। यही स्थिति टेबिल–टेनिस की टेबिल की है। वह जर्जर अवस्था में है और उस पर अभ्यास करना कठिन है।

अतः आपसे निवेदन है कि विद्यालय में खेल सुविधाओं और आवश्यक संसाधनों को उपलब्ध कराकर हम खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करें। आशा है, आप इस दिशा में अतिशीघ्र कार्यवाही कर हमें उपकृत करेंगे।

धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी छात्र,
अर्जुन
दिनांक : 03.01.2019 कक्षा–10

**अथवा**

8. आपका नाम ईशांत है। आप लक्ष्मीनगर, जयपुर के हैं। आपके क्षेत्र में अकसर अनियमित बिजली कटौती की समस्या रहती है। नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने हेतु मुख्य अभियंता विद्युत जयपुर को एक शिकायती पत्र लिखिए।

**उत्तर :**

प्रतिष्ठा में,
मुख्य अभियन्ता विद्युत,
विद्युत विभाग,
जयपुर।

**विषय : नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने हेतु।**

महोदय,

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि मैं जयपुर महानगर के लक्ष्मीनगर का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में अकसर अनियमित बिजली कटौती की समस्या बनी रहती है। गर्मी के इन महीनों में जब जयपुर नगर का तापमान $48^0$ से भी अधिक रहता है। ऐसे में बिजली के अभाव में जो परेशानी होती है, उससे आप भी अच्छी तरह परिचित हैं। हमारे क्षेत्र में बिजली न केवल दिन में ही बार–बार आती–जाती रहती है, अपितु रात्रि के समय भी यह कई बार चली जाती है। इस कारण न दिन में काम किया जा सकता है और न रात में आराम से सोया जा सकता है।

अतः आपसे अनुरोध है कि हमारे क्षेत्र लक्ष्मीनगर में विद्युत की नियमित सप्लाई पर ध्यान देकर यहाँ के निवासियों को इस भयंकर गर्मी में राहत प्रदान कर अनुगृहीत करें।

सधन्यवाद

प्रार्थी/निवेदक,
दिनांक : 29 मई, 2018 (हस्ताक्षर ..........)
ईशान्त
लक्ष्मीनगर, जयपुर

## खण्ड–स

9. **मेहताब खेत जोतता है।** वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

**उत्तर :**

वाक्य में सकर्मक क्रिया है। **परिभाषा–** जिस क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

10. निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं को रेखांकित कीजिए और उनके भेद व काल बताइए– 3

| वाक्य | भेद | काल |
|---|---|---|
| बच्चा रोता होगा। | .......... | .......... |
| श्याम आता है। | .......... | .......... |
| अशोक आया। | .......... | .......... |

**उत्तर :**

| वाक्य | भेद | काल |
|---|---|---|
| बच्चा रोता होगा। | अकर्मक क्रिया | सामान्य भविष्यत् काल |
| श्याम आता है। | अकर्मक क्रिया | सामान्य वर्तमान काल |
| अशोक आया। | अकर्मक क्रिया | सामान्य भूतकाल |

सभी गुरुजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

| वाक्य | भेद | काल |
|---|---|---|
| मैंने पुस्तक पढ़ी है। | सकर्मक क्रिया | आसन्न भूतकाल |
| राम आया होगा। | अकर्मक क्रिया | संदिग्ध भूतकाल |

**11.** बहुब्रीहि समास की सोदाहरण परिभाषा लिखिए? 2

**उत्तर :**

जब समस्त पद में पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे की ओर संकेत करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। उदाहरण–

**मुरलीधर–** मुरली को धारण किया है जिसने (कृष्ण)

**श्वेतांबर–** श्वेत है अंबर जिसके (सरस्वती)

**12.** निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. उन्हों को खाना खिला दो।
2. वह बहुत जल्दी चले गए।

**उत्तर :**

1. उन्हें खाना खिला दो।
2. वे बहुत जल्दी चले गए।

**13.** निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. शंका भाँपना
2. हाथ कटना

**उत्तर :**

1. **शंका भाँपना** (किसी के मन के संशय/भ्रम को पहचानना)– मेरे पिताजी मेरी बातों से ही मेरे मन की शंका भाँप लेते हैं।
2. **हाथ कटना** (बेरोजगार होना)– मशीनी युग के बढ़ने से कई श्रमिकों के हाथ कट गए हैं।

**14.** **चाम का दाम चलाना** लोकोक्ति का आशय लिखिए। 1

**उत्तर :**

काम करवाने का मूल्य न देना/बेगार में काम करवाना।

## खण्ड–द

**15.** निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

दामिनी दमक, सुरचाप की चमक, स्याम
घटा की झमक अति घोर घनघोर तैं।
कोकिला, कलापी कल कूजत हैं जित–तित,
सीकर ते सीतल समीर की झकोर तैं।
सेनापति आवन कह्यो है मनभावन सु
लाग्यौ तरसावन विरह–जुर जोर तैं।
आयौ सखी सावन, मदन सरसावन,
लगयौ है बरसावन सलिल चहुँ ओर तैं।।

**उत्तर :**

**प्रसंग–** प्रस्तुत पद्यांश कवि सेनापति द्वारा रचित **ऋतु–वर्णन** से लिया गया है। इसमें वर्षा ऋतु के आगमन का वर्णन किया गया है। कोई विरहिणी नायिका अपनी सखी से कहती है कि–

**व्याख्या–** हे सखी! सावन का महीना आ गया है। अब बिजली चमक रही है, इन्द्रधनुष भी आकाश में चमकता हुआ शोभित हो रहा है तथा काले–काले बादलों की घटाएँ घनघोर रूप से गायन करके गर्जनाएँ कर रही हैं। अब कोयलें और मोर इधर–उधर सब ओर मधुर स्वर में कूकने लग गए हैं और वर्षा की बूँदों का स्पर्श पाकर हवा के झकोरे भी शीतल हो गए हैं। सेनापति कवि के वर्णनानुसार वह नायिका या कोई गोपिका कहती हैं कि ऐसे समय में मेरे मन को अच्छे लगने वाले प्रियतम ने आने के लिए कहा था। मुझे विरह का ज्वर अत्यधिक तड़पा रहा है अर्थात् प्रियतम के कारण विरह–सन्ताप बढ़ रहा है। हे सखी! सावन या वर्षा ऋतु के आने से कामदेव की सरसता मन में बढ़ रही है अर्थात् सावन आने से प्रिय–मिलन की कामना जाग्रत हो रही है और चारों ओर सावन अत्यधिक वर्षा करने लग गया है, पानी जोर से बरसने लगा है।

**विशेष–**

1. इसमें वर्षा–ऋतु की प्रकृति का सुन्दर चित्रण कर उसे नायिका के विरह को उद्दीप्त करने वाला बताया गया है।
2. शब्द–चित्र एवं दृश्य–बिम्ब अत्यधिक आकर्षक हैं।
3. अनुप्रास, यमक एवं रूपक अलंकार प्रयुक्त है। कवित्त का नाद–सौन्दर्य एवं गेयता प्रशस्य है।

**अथवा**

**15.** निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ़यौ दल,
निबल अनल, गयौ सूरि सियराइ कै।
हिम के समीर, तेई बरसैं विषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन मैं जाइ के।
धूम नैन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिए सौं लगाई रहैं नैंक सुलगाई कै।
मानो भीत जानि महा सीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।।

**उत्तर :**

**प्रसंग–** प्रस्तुत पद्यांश कवि सेनापति द्वारा रचित **ऋतु–वर्णन** से लिया गया है। इसमें कवि ने शिशिर ऋतु का सुन्दर वर्णन किया है।

**व्याख्या–** कवि सेनापति वर्णन करते हुए कहते हैं कि शिशिर–ऋतु में सर्दी की अधिकता का प्रकोप चारों तरफ फैल जाता है, शीत ऋतु की शक्तिशाली सेना सभी पर चढ़ाई कर लेती है। उसकी सेना या शक्ति के आगे आग भी कमजोर पड़ जाती है तथा सूर्य भी ठण्डा (सहन करने योग्य) हो जाता है। शीत ऋतु की बर्फीली हवा इस प्रकार चलने लगती है कि जैसे पैने तीर बरस रहे हों तथा गर्म हवा भवनों के भीतर कोनों में जाकर छिपी रहती हो। इस ऋतु में सर्दी से बचने के लिए लोग आग को घेरकर बैठे रहते हैं, आग पर गिर पड़ते हैं और उसे लगातार सुलगाते हुए अपने हृदय से लगाये रहते हैं अर्थात् निरंतर आग के अति निकट बैठकर छाती को गरमाते रहते हैं। कवि सेनापति कहते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि गर्म कतरे, मानो सर्दी से अत्यधिक भयभीत होकर लोग अपने हाथ फैलाकर आग को अपनी छाती की छाया में छिपाकर रखते हैं। भाव यह है कि लोग हाथ फैलाकर आग सेकते हैं, छाती व शरीर को गर्म करते हैं। मानो आग सर्दी से भयभीत रहती है, इसीलिए लोग अपने हाथ फैलाकर उसकी रक्षा करते हुए उसे अपनी छाती की छाया में छिपाकर रखते हैं, ताकि आग की शीत से रक्षा हो सके।

**विशेष–**

1. शिशिर ऋतु के प्राकृतिक वातावरण का स्वाभाविक एवं कुछ बढ़ा–चढ़ाकर वर्णन किया गया है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

2. सर्दी से आग का ताप कमजोर पड़ना, सूर्य का तेज कम लगना और लोगों के द्वारा आग को छाती से लगाकर उसकी रक्षा करना आदि वर्णन में उक्ति–चमत्कार है। आग एवं शिशिर पर मानव–व्यापारों का आरोप किया गया है।
3. अनुप्रास, स्वभावोक्ति, उत्प्रेक्षा व मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है। कवित्त छन्द की गति–अति सुन्दर है।

**16.** निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए, तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जाएँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमे–हिंद लपककर शेर की गर्दन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा।

**उत्तर :**

**सन्दर्भ एवं प्रसंग–** प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी ईदगाह से लिया गया है। ईदगाह के मैदान पर मेला लगा था। बच्चों ने वहाँ खिलौने खरीदे परन्तु हामिद ने अपने पूरे तीन पैसों से एक चिमटा खरीदा। उसने अपने स्पष्ट तर्कों द्वारा चिमटे को खिलौनों से श्रेष्ठ तथा उपयोगी साबित कर दिया।

**व्याख्या–** हामिद के पक्ष में न्याय और नीति की शक्ति थी। चिमटे की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने के लिए वह जो तर्क दे रहा था, वे न्याय और सत्य पर आधारित थे। अतः बालक उसके चिमटे को अपने खिलौनों से श्रेष्ठ स्वीकार करने को अंत में तैयार हो ही गए और क्यों न होते, खिलौने तो मिट्टी के बने हैं, जबकि हामिद का चिमटा मजबूत लोहे से बना है जो इस समय फौलाद का सिद्ध हो रहा था। निश्चय ही वह चिमटा बच्चों के खिलौनों से श्रेष्ठ, अजेय और घातक भी था। हामिद ने तर्क दिया कि अगर कोई शेर आ जाए तो भिश्ती हार जाएगा, सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भाग जाएगा और वकील साहब को नानी याद आने लगेगी, बेचारे अपने चोगे में मुँह छिपाते फिरेंगे, किन्तु हामिद का चिमटा बहादूर पहलवान की तरह शेर की गर्दन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा। निश्चय ही उसका चिमटा उसके साथियों के सभी खिलौनों से बेहतर था। क्योंकि ये खिलौने मिट्टी के बने थे। जो अंत में टूट–फूट कर नष्ट हो जाएँगे जबकि चिमटा लोहे का बना था जो कभी नष्ट नहीं होगा। चिमटे की इस महिमा ने सभी खिलौनों को और उनके मालिकों (बच्चों) को परास्त कर दिया।

**विशेष–**

1. इस अवतरण में प्रेमचंद ने बाल मनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण किया है।
2. भाषा मुहावरेदार है जैसे– छक्के छूटना, नानी याद आना, गर्दन पर सवार होना आदि।
3. प्रेमचंद ने इस अवतरण में विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया है।

**अथवा**

**16.** निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

बात कुछ बनी नहीं। खासी गाली–गलौज थी; कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए, मानो कोई धेलचा कनकौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकालने वाली चीज है। उसको पेट के अंदर डाल दिया जाना, बेतुकी–सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे–हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

**उत्तर :**

**सन्दर्भ एवं प्रसंग–** प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित **ईदगाह** नामक कहानी से लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। हामिद और अन्य लड़कों में बहस हो रही थी। हामिद अपने चिमटे की तारीफ कर रहा था तो अन्य लड़के अपने–अपने खिलौनों की। महमूद ने कहा कि वकील साहब तो मेजकुर्सी पर बैठेंगे परन्तु चिमटा खाना बनाने में ही लगा रहेगा। यह तर्क दमदार था। हामिद को इसकी कोई काट नहीं सूझी तो वह कुतर्क का प्रयोग करने लगा। उसने कहा कि चिमटा वकील साहब को कुर्सी से उठाकर जमीन पर गिरा देगा और उनके कानून को उनके पेट में डाल देगा।

**व्याख्या–** लेखक कहता है कि कहने को तो हामिद ने कह दिया परन्तु उसकी बात प्रभावपूर्ण नहीं थी। उसका तर्क एक प्रकार की गाली जैसा ही था परन्तु कानून को पेट में डालने की बात का प्रभाव हुआ। वह अकाट्य बात थी। बहस में लगे मोहसिन, महमूद और नूरे कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे। वे तर्क विहिन और चुप थे। जिस प्रकार कोई धेलचा कनकौआ अर्थात् दो पैसे की कम कीमत वाली पतंग किसी गंडेवाल कनकौए अर्थात् चार आने या चौथाई रुपये वाली कीमती पतंग को काट दे, उसी प्रकार हामिद के तर्क ने अन्य लड़कों के सभी प्रभावशाली तर्कों को प्रभावहीन कर दिया था। कानून की बात मुँह से कही जाती है। उसको पेट के अन्दर डालना केवल कुतर्क है परन्तु उसमें नवीनता है। हामिद के इस तर्क ने सबको परास्त कर दिया। सबने मान लिया कि हामिद का चिमटा भारत के इनामी, प्रसिद्ध पहलवान के समान था। अब उसकी श्रेष्ठता को स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं थी।

**विशेष–**

1. प्रेमचन्द ने बालकों के मनोभावों का सुन्दर चित्रण किया है।
2. बच्चे जब बहस करते हैं तो अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए कुतर्क का भी सहारा लेते हैं।
3. कानून को पेट में डालने के कुतर्क ने सभी विरोधी बच्चों को निरुत्तर कर दिया।
4. भाषा सरल और प्रभावशाली है। उसमें उर्दू के, लोकभाषा के तथा तत्सम शब्द हैं। विवरणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

**17.** पठितांश के आधार पर देव की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 6

**उत्तर :**

देव रीतिकाल के अत्यंत उच्च कोटि के रससिद्ध कवि हैं। देव का मुख्य वर्ण्य–विषय श्रृंगार है। काव्यशास्त्र में इन्होंने परम्परागत मान्यताओं का समर्थन किया है और कहीं नई मौलिक मान्यताओं की भी उद्‌भावना की है। पाठ्य–पुस्तक में कवि देव के तीन पद संकलित हैं। इन सभी पदों की भाषा ब्रज है। उनकी भाषा में अनुप्रासों की छटा, प्रसाद गुण–गांभीर्य और मुहावरों का भी प्रयोग दर्शनीय है। प्रथम पद में उन्होंने अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण का गुण कथन करते हुए उनके लोक–प्रचलित स्वरूप को समग्रता से उपस्थित किया है और उन्हें जग–मन्दिर का सुन्दर दीपक और ब्रज दूलह कहकर अपनी श्रद्धा को व्यक्त किया है। दूसरे पद में कृष्ण की जादुई सूरत में गोपिकाओं के विवश समर्पण को व्यक्त किया है। इस पद में कवि ने गोपी की आँखों की शहद की

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

मक्खियों के साथ और कृष्ण के रूप की शहद के साथ तुलना की है। अन्तिम पद में एक विरहिणी नायिका का चित्र है, जो स्पप्न में अपने प्रिय कृष्ण से मिलती है। उसकी नींद टूट जाती है और जागने पर उसे आकाश में न घन दिखाई देते हैं और न घनश्याम कृष्ण ही। इस पद में स्पप्न में सुखद मिलन है और जागरण में जुदाई है। यह विडम्बना ही इस पद की मौलिकता और सुन्दरता है। अपनी काव्यात्मक गहराई, संवेदना की तीव्रता, सरसता और उच्च कोटि की कलात्मकता के कारण देव रीतिकाल के सभी कवियों में श्रेष्ठ कहे जाते हैं।

**अथवा**

**17.** "देव ने दूसरे पद्य में मौलिकतापूर्वक कृष्ण की जादुई सूरत में गोपिकाओं के विवश समर्पण का वर्णन किया है।" इस कथन की सत्यता पर प्रकाश डालिए।

**उत्तर :**

हमारी पाठ्य-पुस्तक क्षितिज के सम्पादक का उक्त कथन पूर्णतया सत्य है कि दूसरे पद्य में देव ने मौलिकतापूर्वक कृष्ण की जादुई सूरत में गोपिकाओं के विवश समर्पण का वर्णन किया है। साँवरिया कृष्ण थे ही ऐसे कि जो कोई उनको एक बार देख लेता, वह देखता ही रहता और उसकी आँखें श्रीकृष्ण के रूप-माधुर्य का पान करने में निमग्न हो जातीं। इसमें बेचारी गोपी का क्या दोष था? उसकी आँखों ने भी कृष्ण को देखा और वे निराधार होकर प्रेम की धारा में गिर पड़ी, वहाँ गिरने के पश्चात् वे प्रयास करने के उपरान्त भी निकल न सकी। वे आँखें अब घेरने से भी नहीं घिरतीं, लौटना चाहकर भी नहीं लौट पातीं। क्योंकि वे परवश हो गई हैं। लाल श्रीकृष्ण के रूप-रस के लालच में पड़कर उनकी दासी हो गई हैं। उनकी स्थिति मधुमक्खियों जैसी बन गई है, जो एक बार मधु से लिपट कर उड़ना नहीं जानतीं अथवा उड़ना भूल जाती हैं। ये ही कारण हैं कि गोपियाँ भी कृष्ण की जादुई सूरत में विवश होकर अपना समर्पण कर देती हैं।

**18.** अमर शहीद एकांकी के आधार पर सागरमल गोपा का चरित्र-चित्रण कीजिए। 6

**उत्तर :**

**अमर शहीद** एकांकी में स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा के चरित्र की अनेक विशेषताएँ बताई गई हैं। उनकी प्रमुख विशेषताएँ ये हैं-

1. **दृढ़-निश्चयी-** सागरमल गोपा दृढ़-निश्चयी एवं दृढ़-संकल्प वाले थे। जैसलमेर महारावल के अत्याचारों का वे अन्त तक विरोध करते रहे।
2. **साहसी व सहनशील-** सागरमल गोपा साहसी थे, वे मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अकेले साहस से आगे बढ़ रहे थे। उन्हें जेल में अनेक असहनीय यातनाएँ दी गईं, उन्हें मार-पीटकर बेहोश किया गया, परन्तु वे सब कुछ सहते रहे।
3. **स्वाभिमानी व देशभक्त-** सागरमल गोपा स्वाभिमानी थे। वे अन्याय-अत्याचार से पीड़ित जनता का पक्ष लेकर स्वाभिमान के लिए अन्त समय तक अडिग रहे। वे सच्चे देशभक्त तथा मातृभूमि के सपूत थे।
4. **लोभ-लालचरहित व स्पष्टवादी-** जेलर तथा पुलिस अधीक्षक ने सागरमल गोपा को लोभ-लालच दिया, माफीनामा लिखने के लिए काफी समझाया, परन्तु मातृभूमि के भक्त सागरमल गोपा लोभ-लालच से रहित बने रहे और अपनी बात स्पष्टता से करते रहे।
5. **बलिदानी-** सागरमल गोपा ने अपने जीवन का बलिदान किया, परन्तु वे अन्याय के सामने नहीं झुके अंत तक लड़ते रहे।

**अथवा**

**18.** 'वह तो बस आहुति देना ही अपना धर्म समझता है।' सागर के इस कथन का क्या अभिप्राय है?

**उत्तर :**

सागरमल गोपा को अपने कर्तव्य से विमुख के लिए जेलर अनेक लालच देता है। वह कहता है कि मनुष्य जीवन चौरासी लाख योनियों के बाद मुश्किल से मिलता है, उसे बिना किसी फल की आशा से यूँ ही मिटा देना उचित नहीं है। तब उसे उत्तर देते हुए सागरमल कहता है कि देश का आजादी रूपी आंदोलन एक यज्ञ जैसा है और इस यज्ञ में सच्चे देशभक्त अपने जीवन एवं प्राणों की आहुति दे रहे हैं। ऐसी आहुति देकर शहीद होने वाले देशभक्त यह नहीं देखते हैं कि उसका फल किसे मिलेगा, उसकी कौन-सी लपट उठेगी? वह तो अपने प्राणों की आहुति देना अपना परम कर्तव्य और धर्म समझता है। स्वतंत्रता आंदोलन इसी आस्था से लड़ा जा रहा है। देशभक्त लोग इसी आशा से अपने प्राणों का बलिदान कर रहे हैं कि देश को आजाद कराना उनका कर्तव्य है और ऐसे कर्तव्यपालन में निजी स्वार्थ के लिए कोई स्थान नहीं है। उनका धर्म यही है कि वे प्राणों का बलिदान कर दें तथा बलिदान की एक लौं जलाकर सैकड़ों-हजारों शहीदों को तैयार करें। इस प्रकार प्राणों का बलिदान देना ही देशभक्त अपने जीवन का ध्येय, परम कर्तव्य, श्रेष्ठ लक्ष्य या फल और पवित्र धर्म मानता है। ऐसा करने से ही इस यज्ञ की पूर्णाहुति हो सकती है।

**19.** शिव का धनुष कैसे टूट गया था? 2

**उत्तर :**

सीता स्वयंवर के लिए जनक जी का प्रण था कि इस राजसभा में जो शिवजी के धनुष को तोड़ेगा, जानकी जी उसका वरण करेंगी। स्वयंवर में उपस्थित लगभग सभी राजाओं ने उसे तोड़ने का प्रयास किया, लेकिन श्रीराम ने उसे बड़ी सरलता से उठाकर तोड़ दिया।

**20.** 'अस्वाभाविक मित्रता के घातक परिणाम होते हैं।' संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

**उत्तर :**

कवि कृपाराम खिड़िया के अनुसार जिन प्राणियों की प्रकृति समान नहीं होती, ऐसी अस्वाभाविक मित्रता के परिणाम हमेशा घातक होते हैं। बिल्ली और चूहा दोनों की प्रकृति अलग है। अपने-अपने हित के विचार से कभी दोनों एक स्थान पर बैठे देखे जा सकते हैं, पर सब जानते हैं कि यह प्रेम-भाव अधिक समय तक रहने वाला नहीं है। देर या सबेर इसका अन्त दुखदायी अथवा घातक ही होगा। क्योंकि बिल्ली शक्तिशाली है, इसलिए वह अवसर पाकर निर्बल चूहे को खा जाएगी।

**21.** वर्षा ऋतु के आगमन से प्रकृति में कौन-कौन से बदलाव आए हैं? 2

**उत्तर :**

वर्षा ऋतु के आगमन से प्रकृति की शोभा ही अलग हो जाती है। वर्षा रानी अपनी पायल को छनकाकर छोटी-छोटी बूँदों के रूप में नाचती-सी प्रतीत होती है। झींगुर उसके स्वागत में अविराम शहनाई वादन करने

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

लगते हैं। मोर कूकने, नाचने और थिरकने लगे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति में नई जान आ गयी है। ग्रीष्म में सूखकर काली पड़ी दूब की शिराओं में रक्त प्रवाह होने लगा है और ग्रीष्म चुपचाप अपना सामान समेट कर विदा हो गया है।

**22.** हामिद के चरित्र की कोई तीन विशेषताएँ बताइए। 2

**उत्तर :**
ईदगाह कहानी में बालक हामिद को इसके नायक के रूप में चित्रित किया गया है। उसके चरित्र में अनेक विशेषताएँ बतायी गई हैं, जिनमें से तीन विशेषताएँ ये हैं–

1. विवेक बुद्धिवाला,
2. भावुक स्नेही तथा
3. लालचरहित सहनशील।

**23.** सूर्यास्त के समय समुद्र के पानी का किन विविध रंगों में परिवर्तन हुआ? 2

**उत्तर :**
सूर्यास्त के समय सबसे पहले समुद्र का पानी सुनहरे रंग का हुआ। फिर कुछ पल बाद वह रक्त के रंग जैसा अर्थात् एकदम लाल हो गया। कुछ क्षण बाद रक्त जैसा रंग भी धीरे–धीरे बैंगनी और बैंगनी से काला पड़ गया। इस प्रकार सूर्यास्त के समय जैसे–जैसे सूर्य–बिम्ब समुद्र के धरातल में डूबता रहा, समुद्र के पानी का रंग क्रमशः सुनहरा, लाल, बैंगनी एवं काले रंग में परिवर्तित हुआ।

**24.** आत्मा और परमात्मा की एकता को लेकर सन्त पीपा ने क्या विचार व्यक्त किये? 2

**उत्तर :**
सन्त पीपा ने इस संबंध में विचार व्यक्त किये कि आत्मा और परमात्मा एक है। यह पंचभौतिक तत्वों का शरीर ही परमात्मा है। इस शरीर में जो आत्मा है वही परमात्मा है। साधु–संतों का घर भी यह शरीर ही है तथा देवताओं की पूजन–सामग्री भी इस शरीर में ही है। आत्मा का ज्ञान होने पर परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है। इसके लिए ज्ञान–चेतना होनी आवश्यक है। सच्चा भक्ति का मार्ग भी यही आत्मा और परमात्मा की एकता की साधना करना है। ऐसी साधना सद्गुरु के बताये मार्ग पर चलने से हो सकती है।

**25.** रस की लालची और दासी कौन हो गई है? 1

**उत्तर :**
नायिका श्रीकृष्ण के रूप–रस की लालची और उनकी दासी हो गई है।

**26.** 'जै जग मंदिर दीपक सुंदर' से कवि का क्या तात्पर्य है? 1

**उत्तर :**
इस पंक्ति से कवि का तात्पर्य है कि यह समस्त संसार एक मंदिर के समान है। इस संसार रूपी मंदिर में श्रीकृष्ण दीपक के समान प्रकाश करने वाले हैं। उन्हीं के कारण इस संसार रूपी मन्दिर में चमक आती है।

**27.** **अमर शहीद** एकांकी का मुख्य पात्र कौन है? 1

**उत्तर :**
**अमर शहीद** एकांकी का मुख्य पात्र सागरमल गोपा है।

**28.** दादूदयाल के तीन प्रमुख शिष्यों के नाम लिखिए। 1

**उत्तर :**
गरीबदास, बधना, रज्जब, सुन्दरदास आदि दादू के प्रमुख शिष्य थे।

**29.** महाकवि देव का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

**उत्तर :**
महाकवि देव को रीतिकाल का अत्यधिक प्रतिभासम्पन्न कवि माना जाता है। अनेक आश्रयदाताओं के आश्रय में रहने से इन्होंने विभिन्न ग्रन्थ रचे। इनके ग्रन्थों की संख्या 52 बताई जाती है, परन्तु प्रमुख समालोचकों ने इनकी पन्द्रह कृतियाँ ही प्रामाणिक मानी हैं, वे ये हैं– **भाव–विलास, अष्टयाम, भवानी–विलास, सुजान विनोद, प्रेम–तरंग, देवमाया–प्रपंच, शिवाष्टक, जाति–विलास, रस–विलास, देवचरित्र, कुशल–विलास, शब्द–रसायन, वैराग्यशतक, सुख–सागर तरंग** आदि। देव काव्यशास्त्र के पारंगत रसवादी आचार्य थे। इन्होंने काव्यशास्त्र के मौलिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। पाण्डित्य के साथ कृतित्व की दृष्टि से इनका वैशिष्ट्य सर्वमान्य रहा।
महाकवि देव ने श्रृंगार–विलास एवं ऐश्वर्यमय जीवन का विभिन्न प्रकार से वर्णन किया है। इनका कवि–व्यक्तित्व भावुक दिखाई देता है। प्रेम–चित्रण में वासना का अभाव तथा अध्यात्म का स्पर्श इनकी कविता का मुख्य स्त्रोत रहा है। सवैया एवं कवित्तों में मुक्तक काव्य की गेयता, रागात्मक भावों की अभिव्यक्ति, भाषा–छन्द–अलंकार की आकर्षक योजना इनके साहित्यिक व्यक्तित्व की अनुपम विशेषता मानी जाती है।

**30.** लक्ष्मीनारायण रंगा के व्यक्तित्व–कृतित्व का परिचय दीजिए। 4

**उत्तर :**
राजस्थान के सृजनधर्मियों में लक्ष्मीनारायण रंगा का नाम अत्यंत चर्चित रहा है। बीकानेर से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये राजस्थान सरकार के भाषा विभाग में मुख्य अनुवादक बनकर जयपुर में नियुक्त हुए। बचपन से ही उनकी नाट्य–विधा में अत्यधिक रुचि रही। नाटक के लेखन, निर्देशन एवं अभिनय में ये सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। इन्होंने हिंदी एवं राजस्थानी दोनों भाषाओं में साहित्य–रचना की। इन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं समसामयिक विषयों पर विभिन्न नाटक एवं एकांकी लिखे हैं। इनकी रचनाएँ आकाशवाणी से प्रसारित होती रहीं। इनके द्वारा रचित नाटक एवं एकांकी अभिनय तथा रंगमंच की दृष्टि से अत्यधिक सफल रहे। इन्हें राजस्थानी भाषा में रचित पूर्णमिदम् (रंगनाटक) कृति पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
लक्ष्मीनारायण रंगा की रचनाओं में हरिया सूवटिया कविता संग्रह तथा टमरकटूँ बाल–कहानियाँ राजस्थानी भाषा में लिखित हैं। हिन्दी में **टूटती नालन्दाएँ, रक्तबीज, तोड़ दो ये जंजीरें, एक घर अपना** नाटक–एकांकी संग्रह तथा **दहेज का दान, हम नहीं बचेंगे** कहानी–संग्रह प्रकाशित हैं। इनके नाटकों की भाषा–शैली ओजपूर्ण तथा संवाद प्रवाहमय व सफल हैं।

□□□□□□□

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com